LADY BRABOURNE COLLEGE

P-1/2, Suhrawardy Avenue, Kolkata - 700 017

organised by

Department of Sanskrit, Bengali & Hindi

in collaboration with

Higher Education Department
Govt. of West Bengal

TWO-DAY NATIONAL SEMINAR

on

DISCOVERY THROUGH TRANSLATION : SUBALTERN STUDIES

17th & 18th August, 2023

অনুবাদের ভুবন যেন এক আশ্চর্য আবিষ্কারের ভুবন। মূলের প্রতি আনুগত্য বজায় রেখেও এক সার্থক অনুবাদ ধারণ করে থাকে অন্য এক পৃথিবী, যার মূল মন্ত্র অনেক ক্ষেত্রেই inclusion. প্রাকৃত মানুষের সঙ্গে মূল রচনাধারার মধ্যেকার ভাবগত, সামাজিক অবস্থানগত, সংস্কৃতিগত, জীবনচর্যাগত এবং সর্বোপরি ভাষাগত যে দূরত্ব তাকে অতিক্রম করে সর্বাধিক জনের কাছে পৌঁছতে পারাই অনুবাদের সার্থকতা। নানা সময়ে বাংলা সাহিত্যে অনুবাদের ধারার মধ্যে লক্ষ্য করা গেছে এই নির্বিশেষ আত্মীকরণের বিষয়টি। তা কখনও প্রথাগত উচ্চবর্ণের সাহিত্য-তত্ত্ব-দর্শনকে সমাজের সমস্ত স্তরের মানুষের কাছে পৌঁছে দিয়েছে, কখনও অন্ত্যজ সমাজের সাহিত্যভাবনার আলো দেখিয়েছে মূলস্রোতের পৃথিবীকে। ভেঙেছে দেশ-কাল-ভাষার আগড়। অনুবাদের হাত ধরে ঈশপের কাহিনি থেকে গ্রিম ভাইদের গল্প, রাশিয়ার রূপকথার ডাইনি বাবা-ইয়াগা থেকে টিনটিন, বিশ্বসাহিত্যের রাজপথ থেকে আফ্রিকার উপকথার মেঠো পথ–সবেতেই উৎসুক পাঠকমনের অবারিত গতাগতি। অনুবাদের এই অনস্বীকার্য প্রয়োজনীয়তা, তার নানামুখী সমস্যা, অনুবাদের পৃথিবীর নানা রাজনীতি ইত্যাদি বিবিধ বিষয় উঠে আসুক এই দ্বি-দিবসীয় আলোচনাচক্রে সুধীজনদের বক্তব্যে।

উপ বিষয় ঃ

১. অনুবাদ ও ভাষা সমস্যা।
২. প্রাকৃত মানুষের সাহিত্য অনুবাদের ধারা।
৩. অনুবাদের রাজনীতি।
৪. সাহিত্য ও অনুবাদের ভুবন ঃ নারী।
৫. সাহিত্যে লোকায়ত দর্শন।
৬. অনুবাদে অন্তেবাসী।

আজ জব মানব–জাति की संप्रभुता पर सबसे ज्यादा हमले हो रहे हैं,तब ऐसे समय में मनुष्य की अस्मिता की विविधता से जुड़े सवालों पर बात करना बेहद जरूरी हो जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में सबाल्टर्न स्टडीज एक नई राह दिखाता है। इसने तीसरी दुनिया की उन ताकतों की पड़ताल की है जिनकी वजह से उत्तर औपनिवेशिक और उत्तर साम्राज्यवादी समाजों में कुछ वर्गों को, कुछ जनसमूहों को हाशिए पर धकेल दिया गया था, जिनकी आवाजों को नहीं सुना गया था, जिन्हें इतिहास और स्मृति से बेदखल कर दिया गया था, जो सामाजिक स्ट्रक्चर में सबसे निचले स्तर पर थे। सबाल्टर्न स्टडीज के अध्ययन के केन्द्र में थे– किसान, श्रमिक, स्त्रियां, दलित, आदिवासी, पिछड़ी जनजातियां आदि।

विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के जरिए इन मूक आवाजों को भी सुना गया है। इनकी अस्मिताओं की अन्टोल्ड कहानियों को आकार दिया गया है। सबाल्टर्न स्टडीज इन मूक आवाजों को डिकोड करता है।

उप-विषय :

1. अनुवाद, संस्कृति और राजनीति
2. साहित्य और संस्कृति : आदिवासी विमर्श
3. साहित्य और स्त्री भाषा
4. जेंडर आईडेंटिटी : मीडिया और पोलिटिक्स
5. उपाश्रितों की आवाज : मीडिया की भूमिका
6. अनूदित साहित्य और दलित विमर्श
7. अनूदित साहित्य और स्त्री प्रश्न
8. सबाल्टर्न स्टडीज : चुनौतियां
9. अनुवाद और जनजाति के प्रश्न
10. अनुवाद : कृषक-स्वर
11. जन साहित्य : लेखन दृष्टि और अनुवाद।

Subaltern studies mainly covers the socio-economic history of non-elites and marginalised section of the society. The tradition of Indian historiography mainly focused on the history of elite class but the emerging trend of subaltern studies establishes the importance of common people in the social history of our country. Subaltern Studies is sometimes also applied more broadly to others who share many of their views and they are often considered to be exemplary of post-colonial studies. It focuses more on what happens among the masses at the base levels of society than among the elites. There are various discourses of subaltern studies. It made efforts to explore the consciousness and actions of the oppressed groups in the Indian society. It is proven that literature is an important source of subaltern studies. In contemporary Indian literature, subaltern studies became a superseding idea and authors turned their writings towards the suppressed voices of society. Literary translations are valuable source in subaltern studies. Translation helps us to understand the multicultural aspects of the marginalised section of India.

The Seminar focuses on the changing social pattern and the life of common masses which are depicted in translations vis-à-vis in the multifaceted discourses of subaltern studies.

Sub-theme :

1. Politics of Translation of Sanskrit Literature.
2. Philosophy of ordinary people in Sanskrit Literature.
3. Presence of marginalised people in the Epic Literature.
4. Modern Translations of the Epics.
5. Subaltern Studies and Modern Sanskrit Literature.
6. **Theme related papers will also be accepted.**

Call for Abstracts & Papers

Well thought out abstracts (**Word limit of Abstract within 300 words in English "Times New Roman Font", Sanskrit, Bengali & Hindi "Unicode" or PDF format**) are invited from Scholars, Researchers, Teachers and Academicians. Abstract is to be sent on this

- ✓ **e-mail : nationalseminarlbc2023@gmail.com**
- ✓ **Registration Link : https://forms.gle/xZZ9S1f9NiXk5k259**
- ✓ **Registration Fee : 1000/-**
- ✓ **TA / DA shall not be provided for our Seminar**

The papers will be considered for presentation, subject to screening by the review sub-committee.
Last date of paper submission : 03-08-2023

Please contact

Dr. Swati Dutta : +91 90389 85387
Dr. Arpita Bhattacharya : +91 98314 74237
Dr. Rinku Ghosh : +91 62907 92670
Dr. Sutapa Ray : + 91 80176 18536

Bank Details :
Bank Name : AXIS BANK LTD.
Branch : C. I. T. Road
A/c. No. : 914010015226395
IFS Code : UTIB0000161